Prof. A.V.Kaur,Head ,Dept. of History,
Ch.Charan Singh University, Meerut(UP).

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत

बीते हुए युगों की घटनाओं के सम्बन्ध में जानकारी देने वाले साधनों को ऐतिहासिक स्त्रोत की संज्ञा दी जाती है। ऐतिहासिक स्त्रोतों में पुरातात्विक स्त्रोत व साहित्यिक स्त्रोत प्रमुख है। मध्यकालीन भारत के इतिहास के अध्ययन के लिए मौलिक स्त्रोत साहित्यिक स्त्रोत ही है। इस काल की विभिन्न प्रकार की रचनाएँ उपलब्ध हैं जिनमें इतिहास की रचनाएँ, शासकों की जीवनियाँ, प्रशासन सम्बन्धी रचनाएँ, साहित्यिक कृतियाँ व यात्रियों वृतान्त प्रमुख हैं। प्राचीन काल में भारत में क्रमबद्ध इतिहास लिखने की परम्परा विकसित नहीं हुई थी। भारत में इसे विकसित करने का श्रेय तुर्क और मुगलों को प्राप्त है। पूर्व इस्लाम काल में अरबों के बीच वंशावलियाँ लिखने की परम्परा विकसित भी जिन्हें **'अन्साव'** कहते थे। अरबो ने **यस्मा उल–रिजाल** नामक एक नई श्रेणी की रचनाएँ प्रस्तुत की जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के सम्बन्ध में संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त संकलित था। मध्यकालीन भारतीय इतिहास जानने के प्रमुख स्त्रोत इस प्रकार हैं –

तहकील–ए–हिन्द (किताबुल हिन्द)

इसकी रचना अलबरुनी ने **अरबी भाषा** में की थी। सर्वप्रथम **सचाऊ** ने इसका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद **'अलबरूनी इंडिया, ऐन एकाउंट ऑफ द रेलिजन'** नामक नाम से किया है। हिन्दी भाषा में इसका अनुवाद **'रजनीकान्त शर्मा'** द्वारा किया गया है। यह रचना **1017** से **1030 ई०** के बीच भारतीय जीवन के अध्ययन एवं निरिक्षण पर आधारित है, इसमें 80 अध्याय हैं। इस ग्रन्थ में अलरूबनी ने

महमूद गजनवी के समय के भारतीय राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक स्थितियों के बारे में विस्तृत वर्णन किया है। अलरूबनी गजनी के शासक महमूद गजनवी का समकालीन था। उसका जन्म **973 ई०** में खींवा (मध्य एशिया) में हुआ था जो उस समय रूवारिज्म कहलाता था। **1018–19 ई०** में वह महमूद गजनवी के साथ भारत आया। महमूद गजनवी के भारत विजय से पूर्व वह एक विद्वान तथा राजनीतिक के रूप में खींवा वंश के अन्तिम शासक रूवारिज्मशाह की सेवा में था। **1017 ई०** में जब महमूद गजनवी ने स्वारिज्मशाह पर आक्रमण कर विजय पायी तो उसी समय उसने अलरूबनी को प्राप्त किया था। जब महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण किया तो अलबरूनी भी उसके साथ आया। भारत को लूटने के बाद महमूद गजनवी अपनी सेवा के साथ गजनी लौट गया किन्तु अलरूबनी कई वर्षों तक भारत में ही रुका रहा। उसने देश के विभिन्न भागों का भ्रमण किया तथा हिन्दुओं की भाषा, धर्म एवं दर्शन का अध्ययन किया। अलबरूनी एकमात्र इतिहासकार ही नहीं था बल्कि उसके ज्ञान एवं रुचियों की ख्याति अन्य क्षेत्रों जैसे– **भगोल विज्ञान, भूंगोल, तर्कशास्त्र, औषधि विज्ञान, गणित, दर्शन, धर्म** और **धर्म शास्त्र** तक भी थी। अलबरूनी का मुख्य उद्देश्य भारत के धर्मों और साहित्य तथा विज्ञान की परम्पराओं के विषय में जानकारी प्राप्त करना था किन्तु उसने यहाँ के रीति–रिवाजों और अंधविश्वासों आदि के सम्बन्ध में भी विस्तृत वर्णन किया है। उसने अपनी पुस्तक **किताबुल–हिन्द** में भारतीयों की विशेषकर पवित्र स्थानों पर तालाबों तथा जल संग्रहण कार्यों के निर्माण में उच्चकोटि की प्रवीणता की प्रशंसा की है। उसने भारतीय परिस्थितियों एवं संस्कृतियों को जानने के लिए ब्रह्मगुप्त के **'ब्रह्म–सिद्धान्त' वराहमिहिर की वृहत्तसंहिता, कपिल के सांख्य** तथा **पतांजलि के**

योग आदि रचनाओं का उल्लेख किया है तथा जगह–जगह भागवत गीता, विष्णु पुराण व वायु पुराण को उद्धत किया है। **पुराणों का अध्ययन करने वाला अलबरूनी प्रथम मुसलमान था।**

अलबरूनी ने अपनी पुस्तक **किताब–उल–हिन्द** ने भारतीय चरित्र की कमजोरियों और भारतीयों की सामाजिक–राजनैतिक व्यवस्था की कमियों जिनके कारण आक्रमणकारियों के हाथों उन्हें पराजय और अपमान भुगतान पड़ा, का तटस्थ विवरण प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त उसने भारतीय सभ्यता का संवेदनशील अध्ययन, गजनवी के लूटपाटपूर्ण आक्रमणों की समालोचना तथा भारत के सामाजिक एवं बौद्धिक इतिहास का वर्णन भी किया है। उसने तत्कालीन भारतीय समाज में प्रचलित **धार्मिक रीतियों, व्रत, पूजा–पाठ, दान, तीर्थयात्रा, दैनिक यज्ञों** आदि का विशद वर्णन किया है यद्यपि इस पुस्तक से तत्कालीन भारत की राजनीतिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। **अलबरूनी** लिखता है कि – **''भारतीयों में यह दृढ़ विश्वास है कि उनके जैसा कोई देश नहीं, कोई राजा नहीं . . . . . कोई ज्ञान–विज्ञान नहीं . . . . . ।''** उसके अनुसार यह नकारात्मक सोच ही उनके पतन का कारण बनी। वह लिखता है कि जाति व्यवस्था इतनी दृढ़ थी कि यदि दो ब्राह्मण भोजन करने बैठते थे तो बीच में एक सफेद कपड़ा रख लेते थे। उसके अनुसार अन्तर्जातीय विवाह नहीं होते थे और विधवाओं का मुण्ड़न कर दिया जाता था। अलबरूनी ने शूद्रों की सबसे बड़ी सूची प्रस्तुत की है। उसके अनुसार इस समय विभिन्न प्रकार के शिल्प मुख्यतः शूद्रों से सम्बन्धित थे। उसने 8 प्रकार के अन्त्यजों (चाण्ड़ालों) का उल्लेख किया है। इसमें **मोची, मछुआरे, शिकारी, टोकरी बनाने वाले, सड़क पर झाड़ू लगाने वाले आदि** शामिल थे।

(2) तारीख–ए–फिरोजशाही

इसके लेखक जियाउद्दीन बर्नी हैं। तारीख–ए–फीरोजशाही को ऐतिहासिक ग्रन्थ की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है, यह फारसी भाषा में है। इतिहासकार **इलियट** और **डाउसन** ने अंग्रेजी में इसका अनुवाद किया। **तारीख–ए–फीरोजशाही** से **1239** से **1359 ई०** तक अर्थात् पूरी एक सदी का सल्तनत कालीन इतिहास मिलता है। इसमें बलबन से लेकर फिरोजशाह तुगलक के शासन के छठें वर्ष तक नौ शासकों का उल्लेख है। बरनी ने अपनी पुस्तक **तारीख–ए–फिरोजशाही** ठीक वहाँ से लिखना शुरु किया, जहाँ से **मिनहाज–उस–सिराज** ने **तवकाल–ए–नासिरी** छोड़ा था। इस प्रकार तारीख–ए–फिरोजशाही, तबकात–ए–नासिरी का उत्तर भाग है। इस ग्रन्थ में सुल्तान बलबन के शासन पर बैठने से लेकर सुल्तान फिरोज तुगलक के प्रारम्भिक 6 वर्षों तक की घटनाओं का वर्णन है। इस ग्रन्थ में बरनी ने भूमि कर के प्रबन्ध का विस्तृत किया है। उसने अलाउद्दीन खिलजी की बाजार व्यवस्था का वर्णन करते हुए लिखा है कि हिन्दू और काफिर वस्तुओं की चोरी करते थे। उसी प्रकार मुहम्मद तुगलक की मुद्रा–व्यवस्था का वर्णन करते हुए उसने लिखा है कि **''प्रत्येक हिन्दू की घर टकसाल बन गया था''** उल्लेखनीय है कि अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियंत्रण प्रणाली का सबसे प्रमाणित विवरण बरनी की पुस्तक **तारीख–ए–फिरोजशाही** से प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त इब्नेबतूता की पुस्तक **'रेहला'** तथा अमीर खुसरों की पुस्तक **'खजाइनुल फतुह'** से भी अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियंत्रण के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(3) फतवा–ए–जहाँदारी

यह तारीख–ए–फिरोजशाही की समकालीन तथा उसका एक पूरक मण्ड़ है। इस पुस्तक में बरनी ने अपने पूर्व लेखन के आधार पर सल्तनत काल के राजनीति दर्शन का विशद वर्णन किया है। इस ग्रन्थ में आदर्श मुसलमान शासकों के गुणों का उल्लेख किया गया है।

जियाउद्दीन बरनी का जन्म **1285 ई०** में सैय्यद परिवार में हुआ था। उसके पिता **मुवैदुल मुल्क** जलालुद्दीन खिलजी के दूसरे पुत्र शहजाद अरकली खाँ के निजी कर्मचारी थे तथा चाचा **अला–उल–मुल्क** अलाउद्दीन खिलजी के सलाहकार तथा राजधानी के कोतवाल थे। उसका पालन–पोषण दिल्ली में सम्पन्न वातावरण और उन दिनों की अत्यन्त कुलीन परम्पराओं में हुआ, उसने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। उसे आरम्भिक मध्यकालीन भारत के सभी समकालीन इतिहासकारों में सबसे महान माना गया है। बरनी को सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक के शासनकाल में एक सम्मानित स्थान प्राप्त था किन्तु वह **मुहम्मद तुगलक** के अधिक निकट था। **मुहम्मद तुगलक** के शासन काल में वह राजदरबार से सम्बन्ध तथा **17 वर्षों** तक उसके संरक्षण में रहा।

(4) तारीख–ए–फिरोजशाही

शम्से सिराज अफीफ द्वारा लिखित यह एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। अफीफ ने कई पुस्तकें लिखी जिसमें तारीख–ए–फिरोजशाही ही उपलब्ध है। यह ग्रन्थ 90 मुकदमाओं (अध्यायों) में लिखी गयी है। अफीफ ने तैमूर के आक्रमण के पश्चात् इस ग्रन्थ को लिखा था। तैमूर की सेना ने जो कहर ढ़ाया था, अफीफ ने स्वयं उसे अपनी आँखों से देखा था, उसे **सुल्तान फिरोजशाह तुगलक** का संरक्षण प्राप्त था। इस ग्रन्थ में अफीफ ने फिरोज तुगलक के काल के स्थापत्य संबंधी गतिविधियों,

नहरें बनवाना, बाग लगवाना, शाही टकसाल की कार्य–विधि, खाद्य पदार्थों के मूल्य, सिक्का ढ़लाई के ब्यौरे, उत्सव समारोह, राजस्व प्रबंध, उसका बंगाल आक्रमण, मंगोल आक्रमण, लोकहितकारी कार्य तथा गुलामों की व्यवस्था का विशद वर्णन किया है।

(5) फतुहात–ए–फिरोजशाही

यह सुल्तान फिरोजशाह तुगलक की आत्मकथा है। इस ग्रन्थ को लिखने का सुल्तान फिरोजशाह का मुख्य उद्देश्य अपने को एक आदर्श मुसलमान शासक सिद्ध करना था। इसमें उसके इस्लाम धर्म में प्रसार के लिए किए गए प्रयत्नों, उसकी नीतियों व विशेषकर जनकल्याण सम्बन्धी कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसी पुस्तक में कहा गया है कि **''जब अल्लाह अपने बंदो की आजीविका नहीं छीनता तो मैं कैसे किसी को उसके पद से हटा सकता हूँ।''**

(6) रेहला

इसकी रचना अफ्रीकी यात्री **इब्नबतूता** ने अरबी भाषा में की भी जो उसकी यात्रा वृतान्त है। इस ग्रन्थ में भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसमें सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक की गुप्तचर व्यवस्था और उसकी मृत्यु की परिस्थितियों का वर्णन है। **सल्तनत काल में डाँक व्यवस्था का विस्तृत विवरण इब्नबतूता** ने ही किया है। इसके अतिरिक्त रेहला में मोहम्मद बिन तुगलक के व्यक्तिगत जीवन, उसके विचार और प्रशासनिक योजनाएँ, राजदरबार की स्थिति तथा सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की झलकियाँ मिलती हैं जो अत्यन्त मनोरंजक और मूल्यवान हैं।

इब्नबतूता का मूल नाम **शेख फतह अबू अब्दुल्लाह** था, जो **मोरक्को**

(अफ्रीका) का मूल निवासी था। **1333 ई०** में मुहम्मद बिन तुगलक के कार्यकाल में भारत आया तथा 14 वर्षों तक भारत में रहा। मुहम्मद तुगलक ने उसे **दिल्ली का काजी नियुक्त किया जो आठ वर्षों तक इस पद पर रहा।** कालान्तर में उसके विरुद्ध कुछ भ्रष्टाचार तथा बेईमानी के आरोप लगे जिसके कारण सुल्तान उससे अप्रसन्न होकर कारागार में ड़ाल दिया था किन्तु बाद में रिहा कर दिया। **1442 ई०** में मुहम्मद तुगलक ने उसे अपना दूत बनाकर **चीन भेजा** परन्तु रास्ते में जहाज खराब हो जाने के कारण वह बीच रास्ते से ही वापस लौट आया।

अमीर खुसरो

अमीर खुसरो जिसका लोकप्रिय नाम **तूती–ए–हिन्द** था। उसका जन्म **1235 ई०** में पटियाली **(उ० प्र० के एटा जिले में स्थित)** में हुआ था। उसका परिवार कई पीढ़ियों से राजदरबार से सम्बन्धित था, स्वयं अमीर खुसरो ने **आठ सुल्तानों** का शासन देखा था। प्रारम्भ में वह बलबन के सबसे बड़े पुत्र मुहम्मद की सेवा में रहा। जब मंगोलों के साथ एक युद्ध में मुहम्मद मारा गया तो मंगोलों ने **अमीर खुसरो को बंदी बना लिया** किन्तु किसी तरह भागकर वह बलबन के दरबार से सम्बन्ध हो गया। इसके पश्चात् वह कैकूबाद, क्यूमर्स, अलाउद्दीन खिलली, जलालुद्दीन खिलजी, मुबारक खिलजी, मुसखशाह तथा गयासुद्दीन तुगलक तक के शासन काल को अपने आँखों से देखा तथा इनकी सेवा में रहा। **अमीर खुसरो** अलाउद्दीन खिलजी के **दक्षिण अभियान के समय उसके साथ गया था।** वह प्रसिद्ध सूफी संत **निजामुद्दीन औलिया** ने अमीर खुसरो को **तर्कल्लाह की उपाधि** दी थी। इसकी मृत्यु **1325 ई०** में निजामुद्दीन औलिया के मृत्यु के दूसरे दिन गयासुद्दीन तुगलक के समय में हुई। **अमीर खुसरो प्रथम मुस्लिम कवि था जिसने हिन्दी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया**

है।

<u>प्रसिद्ध रचनाएँ–</u>

अमीर खुसरो की प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं –

किरान–उस–सदामन, मिफताह–उल–फुतुह, खजामन–उल–फुतुह, आशिका, नूह सिपिहर, तुगलकनामा व **एजाज–ऐ–सुखरवी।**

आशिका

इसमें गुजरात के राजा करन की पुत्री **देवल रानी** और अलाउद्दीन के पुत्र **खिज्र खाँ** की प्रेमगाथा का वर्णन है। इसके अतिरिक्त अलाउद्दीन खिलजी की गुजरात तथा मालवा विजय व मंगोलों द्वारा स्वयं अपने कैद किए जाने का वर्णन किया है। आशिका काव्य शैली में लिखित गन्थ है। अमीर खुसरो ने इसे अलाउद्दीन खिलजी के पुत्र खिज्र खाँ के आदेश पर लिखा था।

नूह–सिपिहर

इसमें **अलाउद्दीन खिलजी** के पुत्र **मुबारकशाह खिलजी** के चाटुकारिता पूर्वक वर्णन किया है। इस ग्रन्थ में अमीर खुसरो ने मुबारक खिलजी की विजयों के साथ–साथ भारत की जलवायु, पशु–पक्षियों तथा धार्मिक जीवन का रोचक विवरण दिया है। इस ग्रन्थ में खुसरव ने भारत की तुलना **स्वर्ग के उद्यानो** से की है।

तुगलकनामा

अमीर खुसरो की यह अन्तिम ऐतिहासिक मनसवी है। इसमें खुसरव शाह व गयासुद्दीन तुगलक के मध्य कुटनीति व युद्ध तथा गयासुद्दीन तुगलक द्वारा दिल्ली के सिंहासन को प्राप्त करने का विवरण है। यह ग्रन्थ काव्य शैली में है।